

# योग

३	नियुक्ति की अवधि	०१ वर्ष के लिए है। यह योजना आयुष मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा संचालित की जा रही है। अतः अधिक का निर्धारण वर्हा से होगा।
४	चयन की प्रक्रिया	यह नियुक्तिया न तो किसी सूचित पद के विकल्प होनी है और न ही यह नियमित तैनाती है। अतः ऐसे संविधा के संबंध में अन्य योजनाओं जैसे राष्ट्रीय स्तरात्मक नियम (एन०८०८०८०) की भौति राष्ट्रीय आयुष नियम (एन०८०८०८०) द्वारा समय-समय पर जारी एवं प्रचलित नियंत्रण के अनुसार ही कार्यवाही की जायेगी।
५	क्या इन्हें लिया जायेगा?	आउटसोर्स से शुक्रि एकमुक्त मानदेश पर कार्य लिया जाना है एवं आउट सोर्स एजेंसी द्वारा सर से कठोरी आदि होती है। अतः क्षेत्रिय आयुर्वेद यूनानी अधिकारी द्वारा सीधे अनुबंध कर संविता पर रखा जायेगा।

- 2- प्रदेश में योग वेलनेस सेंटर का सुचालन किये जाने हेतु निम्नलिखित अधिकृत संलग्न है-
1. योग वेलनेस सेंटर की कार्य योजना एवं विशा निर्देश।
  2. योग वेलनेस सेंटर के संचालन हेतु अवश्यक सामग्री का विवरण।
  3. योग वेलनेस सेंटर के योगाचारियों के लिए बुकलेट का प्रारूप।
  4. योग वेलनेस सेंटर के योगाचारियों के फोड़क का प्रारूप।
- संलग्न-योगपति।**

संख्या-६२१/१६-आयुष-२-२०१८ तददिनांक  
प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित-  
१. नियम नियंत्रक, उ०८० राज्य आयुष सेवाइट, लखनऊ।  
२. नियंत्रक, होमोपथिक /नियंत्रक, आयुर्वेदिक सेवाएं /नियंत्रक, यूनानी सेवाएं, उ०८०।  
३. समस्त क्षेत्रिय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी/जिला होमोपथिक चिकित्साविधिकारी, उ०८०।  
४. कार्यक्रम प्रबंधक, उ०८० राज्य आयुष सोसाइटी, लखनऊ।  
५. वित्त नियंत्रक, उ०८० राज्य आयुष सोसाइटी, लखनऊ।  
६. गाई फाइल।

भवदीपी,

( यतीन्द्र माहन )

सचिव।

संख्या-६२१/१६-आयुष-२-२०१८ तददिनांक

1. नियम नियंत्रक, उ०८० राज्य आयुष सेवाइट, लखनऊ।
2. नियंत्रक, होमोपथिक /नियंत्रक, आयुर्वेदिक सेवाएं /नियंत्रक, यूनानी सेवाएं, उ०८०।
3. समस्त क्षेत्रिय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी/जिला होमोपथिक चिकित्साविधिकारी, उ०८०।
4. कार्यक्रम प्रबंधक, उ०८० राज्य आयुष सोसाइटी, लखनऊ।
5. वित्त नियंत्रक, उ०८० राज्य आयुष सोसाइटी, लखनऊ।
6. गाई फाइल।

आका से,

( यतीन्द्र माहन )

विशेष सचिव।

यम, नियम पालन करे, साधे जो नर योग।  
परहित का साधन करे, निकट न आवे रोग। ॥ १ ॥

जो नर बौद्ध करवत सोये।  
उसका काल वेठकर रोये। ॥ २ ॥

नसे रोग निटे सब पीरा।

जो हरि भजन करे नित धीरा। ॥ ३ ॥

औषध नहीं व्यायाम समान।

व्यय नहीं कोई लाभ महान। ॥ ४ ॥

आसन, सत्तंग, ध्यान समाधि।

दूर करे तन मन की व्याधि। ॥ ५ ॥

साधो योग, भगाओ रोग। ॥ ६ ॥

योगो ही परमोषधम्। ॥ ७ ॥

मन रूपी हाथी को बुद्धि के अंकुश में रखना चाहिये। ॥ ८ ॥  
इन्द्रिय दमन का अस्मास मनुष्य को प्रसन्न रखता है। ॥ ९ ॥

रोग का सूकृपात मानव मन में ही होता है। ॥ १० ॥  
जिसकी इन्द्रियां वश में हैं,

उसकी बुद्धि स्थिर है। ॥ ११ ॥

आदत बुरी सुधार कर, मन की रोक तरंग।  
दुष्ट जनों का समा तज, कर सुजनों का समा। ॥ १२ ॥

चोरी और व्यभिचार से, रहो हमेशा दूर।

प्रमु चिन्तन करते रहो, सुख पाओ भरपूर। ॥ १३ ॥  
ईश्वर और मौत को, कभी न मन से भूल।

सत्य वर्चन अरु शीलता, होते सुख के मूल। ॥ १४ ॥  
दोलत पाकर बावरे, मत कर गर्व गुमान।

यहं पड़ा रह जायेगा, यह सारा सामान। ॥ १५ ॥  
येदल चलना स्वास्थ्य को, देता है आराम।

सभी मांसपेशियों का, हो जाता व्यायाम। ॥ १६ ॥  
वायों करवत सोइये, रहे निरेग शरिर। ॥ १७ ॥

हर गत के पिछले हिस्से में,

इक दालत लुटती रहती है।

जो जानते हैं सो खोता है। ॥ १८ ॥  
जल के नाल जले, सकल प्रयत्न विसार।

स्वर्ण एवं चारों यह, चुम्हे वारम्बर। ॥ १९ ॥

दोनों तरफ दोनों तरफ प्रमु चिन्तन से याम।

योग का अन्त यह है, जो जीवन का अन्त है।